ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-2* May- 2017
Anthology : The Research

समाज में हिन्दी बाल कविता की सार्थकता

पंकज यादव
शोधछात्र,
हिन्दी विभाग,
दतिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
दतिया, म0प्र0

सारांश

किसी भी राष्ट्र रूपी वृक्ष की जड़े वहाँ के बच्चे होते हैं। उन बच्चों को शिक्षा रूपी जैसा खाद्य, पानी दिया जाएँगा तब राष्ट्र रूपी वृक्ष की शाखाएँ उसी प्रकार पल्लवित व विशाल हो सकेंगी। इसी कारण से हमें बच्चों को अच्छी शिक्षा व अच्छा माहौल उपलब्ध कराना चाहिए। जिससे एक भावी राष्ट्र का उत्कृष्ट उत्थान किया जा सकेगा। कोई भी सामाजिक विचार समाज व देश के उत्थान के लिए हर सम्भव प्रयास यहीं किया जाता हैं। तभी उस देश के बच्चों को अच्छे माहौल के साथ विकास व उन्नति के रास्ते पर चलाने के लिए उन्हें प्रेरित किया जाए। जिस देश का जैसा सामाजिक वातावरण होता हैं। वहाँ की जलवायु के अनुसार वहाँ के बच्चे भी वैसे बनते जाते हैं। इसके साथ ही वहाँ के कवियों व रचनाकारों के द्वारा अपने लेखों, कविताओं के माध्यम से वहाँ के क्षेत्र में बड़ा बदलाव लाया जा सकता हैं।

मुख्य शब्द : सामाजिक, बाल कविता, राष्ट्र।

प्रस्तावना

सामाजिक व्यवस्था के बदलाव में यही हिन्दी बाल कविताओं की सार्थकता होती हैं कि कवि अपनी लेखनी के द्वारा उस परिवेश में बदलाव करने की क्षमता होती हैं। इसी कारण हिन्दी बाल कविताओं की उपयोगिता, हमारे समाज में इनका योगदान बढ़ता जाता हैं। जो किसी सामाजिक बदलाव में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। हिन्दी बाल कविताओं के माध्यम से ऐसे प्रयास निरन्तर किए जाते रहे हैं। बच्चों को बाल कविताओं के माध्यम से उनके अन्दर एक सार्थक सोच विकसित की जाए। जिससे बच्चों को सामाजिक परिवेश की सार्थक स्थिति से जोड़ा जाए और उसी के अनुरूप कवियों को भी अपनी लेखनी के द्वारा इसको सम्भाला जाए।

बच्चों के सार्थक विकास के लिए समुचित बाल कविताओं का लेखन बहुत जरूरी हैं। बच्चे जिन चीजों को बचपन में पढ़ते या सुनते हैं । वो सभी चीजें उन्हें हमेशा के लिए कण्ठस्थत हो जाती हैं। बच्चे जल्दी उन चीजों को भूलते नहीं हैं। यही बाल कविताओं की सार्थकता हमारी सामाजिक व्यवस्था की सार्थकता सिध्द होती हैं। इसी सार्थकता के सम्बन्ध में हरिकृष्ण देवसरे लिखते हैं– "बच्चों के सर्वांगीण विकास में इसीलिए साहित्य की भूमिका को बहुत महत्व दिया गया हैं। पाल हेजार्ड ने लिखा हैं – पुस्तकें वे ही अच्छी होती हैं जो बच्चों को साहस व ज्ञान ही नहीं, बल्कि अन्तर्ज्ञान भी दे सकें य एक ऐसा सरल सौंदर्य दे सकें जिसे वे सरलता से ग्रहण कर सकें और बच्चों की आत्मा में ऐसी भावना का संचार करें जो उनके जीवन में आस्था उत्पन्न करें और खेल की महत्ता तथा साहस के प्रति आदर जाग्रत करें।"[1]

हरिकृष्ण देवसरे द्वारा सही ही कहा गया हैं कि बच्चों के विकास के लिए कविताओं का बहुत बड़ा योगदान हैं। बिना इनके योगदान के बालकों की समुचित उन्नति नहीं की जा सकती हैं। जब किसी राष्ट्र के बच्चे भाग्य विधाता, उन्नतिशील, सामाजिक व जागरूक होंगे। तो वहाँ की सामाजिक व्यवस्थाओं को वो आसनी से संचालित कर सकते हैं। इसी संचालन में हमारे देश की प्रगति, ज्ञान व उत्कृष्टता छिपी होती हैं। किसी भी सफल देश व समाज के लिए वहाँ की बाल कविताओं की विकसित सोच पर टिकी हुई होती हैं। बाल कविताएँ जितनी विकसित या जितनी उन्नतिशील होगी। वहाँ का सामाजिक ढाँचा भी उतना ही बेहतर होगा। इसी कारण हम सामाजिक संरचना में बाल कविताओं के योगदान को कम करके नहीं आँका जा सकता हैं। इन कविताओं का भी सामाजिक व्यवस्था में बराबर का योगदान हैं।

हिन्दी बाल कवियों ने अपने सम्पूर्ण जीवन के व्यक्तित्व को निखारते हुए, अपनी कविताओं का सृजन किया हैं। जिसमें तमाम सामाजिक परिवेश की धारणाओं को अपनाया गया हैं। जिससे इन कविताओं को पढ़ते ही बच्चे सीधे–सीधे इनसे जुड़ते चले जाते हैं। कविताओं का मुख्य उद्देश्य यही होना

चाहिए कि वो बच्चों कों अधिक से अधिक रूप से अपनी कविताओं से जोड़ सकने में सक्षम हो सकें। इस जुड़ाव के सम्बन्ध में उषा यादव व राज किशोर सिंह कहते हैं– "हिन्दी बाल कविता में समूचे लोक हृदय का सुख–दुख स्पंदित हुआ हैं । लोक हृदय की संवेदनाओं को अनदेखा करके स्थायी महत्व का साहित्य भी नहीं रचा जा सकता हैं, चाहे वह बच्चों के लिए लिखा जाने वाला साहित्य ही क्यों न हो, पर लोक से जुड़ना हर किसी की वश की बात नहीं। संवेदनशील रचनाकर ही ऐसा कर सकता हैं। हर्ष की बात हैं कि हिन्दी के सिध्द हस्त बाल कवियों में सामाजिक सरोकार पूरी संजीदगी के साथ मुखरित हुए हैं।"[2]

इस प्रकार से कहा जा सकता हैं कि हिन्दी बाल साहित्यकारों की कविताओं में सामाजिक स्थिरता, महत्व, सहयोग व सामंजस्य की भावना से सीधे–सीधे आज की पीढ़ी को जोड़ा गया हैं। अगर आज के बच्चों को इन सम्बन्धों को बचपन से ही समझा दिया जाए। तो उनके अन्दर की भावनाएँ और अधिक समाज के प्रति दृढ़ हो जाती हैं और वे अपनी ऐतिहासिक विरासत को पूरी क्षमता के अनुरूप जोड़ने का काम करने लगते हैं। जो एक सामाजिक व्यवस्था के लिए बेहद जरूरी हो जाता हैं। तभी तो हिन्दी बाल कविताएँ इन सामाजिक यथार्थ पर पूरी तरह से सार्थक सिध्द होती हैं। जो एक पूर्व व्यवस्था को लेकर अपने साथ चलने का प्रयास ही नहीं करती हैं बल्कि नवीन पीढ़ी को भी उसी सामाजिक संरचना में ढालने का प्रयास करती हैं। यह हमारे राष्ट्र के लिए बहुत ही आवश्यक हो जाता हैं। इस कड़ी को बनाएँ रखना भी जरूरी होता हैं। जो आज की कविताओं में स्पष्ट रूप से झलकता हुआ हमें प्रतीत होता हैं।

समाज ही बच्चों को एक सार्थक पहचान देता हैं। समाज से ही जुड़कर बच्चे अच्छे इंसान बनते हैं। जब समाज के अन्तर्गत एक अच्छे साहित्य का सृजन किया जा रहा हो तो ऐसा समाज बहुत ही अच्छा समाज माना जाता हैं क्योकि कविताएँ बच्चों के बीच सामाजिक ताना–बाना बुनने का काम करती हैं। जो बच्चों के इर्द–गिर्द रहकर उनका बाहरी दुनियाँ से सम्पर्क कराती हैं और नित ऊँचाइयों कों छू सकें। इस सम्बन्ध में हरिकृष्ण देवसरे लिखते हैं – "बच्चे राष्ट्र की आत्मा हैं क्योंकि यही हैं जिनको लेकर राष्ट्र पल्लवित हो सकता हैं, यही हैं जिनमें अतीत सोया हुआ हैं, वर्तमान करवटे ले रहा हैं और भविष्य के अदृश्य बीज बोए जा रहे हैं। किसी विचारक का यह कथन सभी राष्ट्रों को अपने देश के बच्चों के विकास और उन्नति के कार्यो के प्रति उत्तरदायी बनाने की प्रेरणा देता हैं। जिस देश का जैसा सामाजिक परिवेश होता हैं, उस देश के बच्चे उसी तरह के बनते हैं। यदि इनको अलग कर दिया जाए तो वे न केवल बहरे और गूँगे हो जाएँ बल्कि बहुत–कुछ पशुओं जैसा आचरण भी करने लगें।"[3]

किसी भी राष्ट्र के सम्पूर्ण विकास के लिए उस राष्ट्र की नवागत पीढ़ी को शिक्षित होना बेहद जरूरी होता हैं। बिना उनका समुचित विकास किए किसी राष्ट्र का सम्पूर्ण उत्थान नहीं हो सकता हैं। बालकों के समग्र विकास के साथ–साथ कविताओं के माध्यम से सीख देना भी जरूरी हो जाता हैं क्योकि कविताओं को बच्चे अधिक चाव से पढ़ते , सुनते व सीखते हैं । उन्हें याद करके बच्चे हमेशा गुनगुनाते रहते हैं – इसी प्रकार की परशुराम शुक्ल की कविता हैं "जीवन लक्ष्य" जो बच्चों को अपने जीवन के लक्ष्य के बारे में शिक्षा देते हुए एक कविता के माध्यम से बताते हैं –

"भक्त राज प्रह्लाद बनों या,
ध्रुव समान बन जाओं।
त्याग तपस्या और लगन से,
धरती पर छा जाओं।
कवि बनाना तो गुरु रविन्द्र से,
गीतांजलि सम लिखना।
वृहत्रयी सा याद करें सब ,
युगों–युगों तक खिलना।"[4]

कवि बच्चों को सीख देता हुआ कहता हैं कि हमारे जीवन के उद्देश्य भी निर्धारित होने चाहिए। बिना अपना लक्ष्य बनाएँ हम अपने सार्थक उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर पाते हैं। अगर हम अपने मन में किसी बात को लेकर संकल्प धारण कर पाते हैं। तो हम उस लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेते हैं। इस कारण से हम बच्चों को चाहिए कि हम अपना लक्ष्य बचपन से निर्धारित करें। जिससे हम उसे प्राप्त करने में सफल हो सकें एवं हमें वहाँ तक पहुँचने में किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े। ये ध्येय हमारे अन्दर होना चाहिए। परशुराम शुक्ल अपनी कविता "वृक्ष का महत्व" के बारे में बच्चों को बताते हुए कहते हैं। कि एक वृक्ष दृढ़ता से किस प्रकार खड़ा रहता हैं–

"हरियाली की रक्षा करता,
लगता कितना प्यारा वृक्ष।
मीठे – मीठे फल देता,
गर्मी भी हर लेता वृक्ष।
पहले बनता नन्हा पौधा,
फिर धीरे से बनता वृक्ष।
रंग – बिरंगे फल फूलों से,
हर मौसम में भरता वृक्ष।
पथिकों को छाया देता हैं,
ठण्डी हवा चलाता वृक्ष।"[5]

बच्चों को सामाजिक महत्व के साथ–साथ, हमारे लिए जितनी उपयोगिता समाज की हैं उतनी ही हम सबके लिए उपयोगी बने। हम सबके साथ ही हमारे आस–पास जो पेड़ पौधे हैं। हम उनका भी ध्यान रखे क्योकि वो भी हमारे लिए कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। इस कारण से इन पेड़–पौधो की रक्षा करना हमारा परम धर्म बन जाता हैं। हमें कठोर परिश्रम करते हुए बिना किसी बाधा के आए, अपने कर्त्व्य मार्ग पर चलते जाना हैं। तभी हमारे अभीष्ट की प्राप्ति हो सकती हैं। हर मार्ग में कठिनाई आती हैं लेकिन हमें उनसे घबराने की जरूरत नहीं हैं। जो बाधाओ से घबराते नहीं हैं, उनकी परवाह किए बगैर आगे बढ़ते जाते हैं वही अपने जीवन में सफल होते हैं। इसी सन्दर्भ में परशुराम शुक्ल की कविता हैं "आगे बढ़ना"। जिसमें बच्चों को पढ़ाई के महत्व के बारे स्पष्ट सन्देश दिया गया हैं कि शिक्षा ग्रहण करके ही सफल हुआ जा सकता है–

"जब तक हम में दम हैं,
हमको, आगे बढ़ना हैं।
जिसको पढ़ना लिखना आता।
अपना जीवन सुखी बनाता।
जीवन में कुछ पाना हैं तो ,
हमको पढ़ना हैं।
आगे बढ़ना हैं.....
संघर्षों से मत घबराओं।
तूफानों से जा टकराओं।
निश्चय करके अपने मन में,
ऊपर चढ़ना हैं।
आगे बढ़ना हैं.....
जो बनना हैं आज बनों तुम।
भारत माँ का ताज बनों तुम।
एक स्वप्न पूरा होते ही,
दूजा गढ़ना हैं।
आगे बढ़ना हैं.....।"[6]

निष्कर्ष

परशुराम शुक्ल की यह कविता बच्चों को निरन्तर आगे बढ़ने का पाठ पढ़ाती हैं कि हम बच्चों को निरन्तर बिना किसी परवाह के आगे बढ़ते जाना हैं । तभी हम उन्नति कर सकते हैं । बिना पढ़े तो हम सबके द्वारा कुछ किया भी नहीं जा सकता हैं । "प्यारा भैया" शुक्ल की एक कविता हैं जिसमें उन्होंने बच्चों को समझाया हैं कि हमे हमेशा अपने माता–पिता की बातों को मानना चाहिए । बिना उनकी आज्ञा के कोई भी कार्य हमें नहीं करना चाहिए । देखिए कविता की ये पंक्तियाँ–

"यह हैं मेरा प्यारा भैया,
मैं हूँ इसकी बहना।
मम्मी–पापा का हम दोनां,
सदा मानते कहना।"[7]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *बाल साहित्यः मेरा चिंतन – डॉ. हरिकृष्ण देवसरे , मेधा बुक्स , दिल्ली – 2002 , पृष्ठ– 198*
2. *हिन्दी बाल साहित्य और बाल विमर्श–उषा यादव , राज किशोर सिंह, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली–2014, पृष्ठ–101*
3. *बाल साहित्य : मेरा चिंतन – डॉ. हरिकृष्ण देवसरे , मेधा बुक्स , दिल्ली–2002 , पृष्ठ – 193*
4. *तिरंगा–परशुराम शुक्ल, जनवाणी प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली–2009, पृष्ठ –19*
5. *मंगल ग्रह जाएँगे–परशुराम शुक्ल, सन्मार्ग प्रकशन, दिल्ली–2012, पृष्ठ–74*
6. *चिड़िया नीड़ बनाती– परशुराम शुक्ल , पृष्ठ दृ 26*
7. *कलरव– परशुराम शुक्ल, विज्ञान शिक्षा संस्थान, गाजियाबाद– 2010 , पृष्ठ– 46*